0846CH09

9 कबीर की साखियाँ

जाति न पूछो साध की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।1।।

आवत गारी एक है, उलटत होइ अनेक।
कह कबीर नहिं उलटिए, वही एक की एक।।2।।

माला तो कर में फिरै, जीभि फिरै मुख माँहि।
मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तौ सुमिरन नाहिं।।3।।

कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होइ।
उड़ि पड़ै जब आँखि मैं, खरी दुहेली होइ।।4।।

जग में बैरी कोइ नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।।5।।

• *संत सुधासार* : सं.–वियोगी हरि

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. 'तलवार का महत्त्व होता है म्यान का नहीं'—उक्त उदाहरण से कबीर क्या कहना चाहते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. पाठ की तीसरी साखी-जिसकी एक पंक्ति है 'मनुवाँ तो दहुँ दिसि फिरै, यह तो सुमिरन नाहिं' के द्वारा कबीर क्या कहना चाहते हैं?
3. कबीर घास की निंदा करने से क्यों मना करते हैं। पढ़े हुए दोहे के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. मनुष्य के व्यवहार में ही दूसरों को विरोधी बना लेनेवाले दोष होते हैं। यह भावार्थ किस दोहे से व्यक्त होता है?

पाठ से आगे

1. "या आपा को डारि दे, दया करै सब कोय।"
   "ऐसी बानी बोलिए मन का आपा खोय।"
   इन दोनों पंक्तियों में 'आपा' को छोड़ देने या खो देने की बात की गई है। 'आपा' किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है? क्या 'आपा' स्वार्थ के निकट का अर्थ देता है या घमंड का?
2. आपके विचार में आपा और आत्मविश्वास में तथा आपा और उत्साह में क्या कोई अंतर हो सकता है? स्पष्ट करें।
3. सभी मनुष्य एक ही प्रकार से देखते-सुनते हैं पर एकसमान विचार नहीं रखते। सभी अपनी-अपनी मनोवृत्तियों के अनुसार कार्य करते हैं। पाठ में आई कबीर की किस साखी से उपर्युक्त पंक्तियों के भाव मिलते हैं, एकसमान होने के लिए आवश्यक क्या है? लिखिए।
4. कबीर के दोहों को साखी क्यों कहा जाता है? ज्ञात कीजिए।

© NCERT not to be republished

भाषा की बात

- बोलचाल की क्षेत्रीय विशेषताओं के कारण शब्दों के उच्चारण में परिवर्तन होता है जैसे वाणी शब्द बानी बन जाता है। मन से मनवा, मनुवा आदि हो जाता है। उच्चारण के परिवर्तन से वर्तनी भी बदल जाती है। नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनका वह रूप लिखिए जिससे आपका परिचय हो।

  ग्यान, जीभि, पाऊँ, तलि, आँखि, बरी।

शब्दार्थ

ग्रान	–	जानकारी
म्यान	–	तलवार रखने का कोष
गारी	–	गाली, अपशब्द
कर	–	हाथ
दहुँ	–	दस
दिसि	–	दिशा
सुमिरन	–	ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
दुहेली	–	दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्टसाध्य
बैरी	–	दुश्मन
आपा	–	अहं

© NCERT not to be republished